सुभद्रा सेनगुप्ता

गुगली

“कल्लू उठो, तुमने फिर देर कर दी।”

कल्लू ने ऊँघती शक्ल रज़ाई के भीतर से निकाल कर कहा,

“निम्मी, अभी तो बहुत वक्त है। मैं तो ठीक से सोया भी नहीं।”

“नहीं, वक्त नहीं है। सारे बच्चे कब के निकल गए,” निम्मी बोली।

कल्लू बिस्तर से उछल पड़ा। “सभी निकल गए? बाप रे....” वह चिल्लाया! आज फिर उसे कोई झूठी कहानी गढ़नी पड़ेगी मास्टरजी को बताने के लिए। उसे रोज़-रोज़ क्यों देर हो जाती है?

कल्लू ने जल्दी से मुँह-हाथ धोए। पाजामा और कुर्ता खींचकर पहना। पैरों को चप्पल में घुसेड़ते हुए उसने बहन की तरफ ईर्ष्या से देखा। “काश, मेरी भी टाँग टूट जाती! पूरे एक महीने की छुट्टी तो मिलती।”

निम्मी ने अपने पलस्तर लगे बाएँ पैर की तरफ देखा। “हाँ, हाँ। जैसे कि पैर टूटने में बड़ा मज़ा आता हो....!”

कल्लू ने बस्ता खींचा। अम्मी की रखी हुई रोटी और प्याज़ के टुकड़े मुँह में भरते हुए वह गाँव के रास्ते स्कूल की ओर भाग निकला। इस हफ्ते वह तीसरी बार देर से पहुँच रहा था।

मास्टरजी ज़रूर उसे बैंच पर खड़ा रखेंगे।

चाय की दुकान की बगल से भागते हुए कल्लू चिल्लाया, “सलाम चाचा।”

चाय की दुकान वाले धर्मपाल जी मुस्कराए, “अरे कल्लन, अभी कहाँ चल दिए?” कल्लू चुप रहा। चाचा उसे फिर चिढ़ा रहे होंगे। “आज मेरी किस्मत ही खराब है,” सोचता हुआ वह भैसों के बीच से रास्ता निकालने लगा। वह भैसों से बच ही रहा था कि बद्री खीसें निपोरकर बोला, “बड़ी जल्दी आ गए आज तो।” “हाँ, हाँ, इतनी जल्दी आ गया कि अभी तो सबेरा हुआ ही नहीं, कल का दिन ही चल रहा होगा,” कल्लू बुदबुदाया। अब मास्टरजी को क्या बताए? अम्मी बीमार है और मुझे रोटी बनानी पड़ी? बकरी खो गई थी? किसी ने मेरी कलम चुरा ली थी? चप्पल टूट गई थी? ऊँहूँ, ये सारे बहाने तो वह पहले ही इस्तेमाल कर चुका था। मीरा के घर की बगल से निकलते हुए उसने देखा कि उसकी सहपाठी अभी तक नाश्ता कर रही है। “आज इसे भी देर हो गई,” मन ही मन खुश होता हुआ कल्लू बढ़ा। “जल्दी करो, वरना तुम्हें हफ्ते भर बैंच पर ही खड़ा रखा जाएगा,” कल्लू भागते हुए चिल्लाया। पीछे मुड़कर देखने की फुर्सत कहाँ थी। स्कूल के फाटक पर देखता क्या है कि मुँह में पान की गिल्लौरी भरते हुए खुद मास्टरजी खड़े हैं! कल्लू ठिठक गया।

घबराकर बोला, “ओह, मास्टरजी, आज मेरा कसूर बिल्कुल नहीं है। मुझे नहाने में निम्मी की मदद करनी थी। आपको तो पता है उसका पैर....।”

“मुझे नई कहानी बताने की क्या ज़रूरत है भई, आज तो तुम आधे घण्टे पहले आ गए,” मास्टरजी बोले।

“आधे घण्टे पहले? आपका मतलब मैं...मैं...” कल्लू हकलाया। तो यह निम्मी की चाल थी! घर पहुँच कर बताऊँगा उसे, ठहर जा – वह मन ही मन बुदबुदाया। वह सोचने लगा कि बदले में निम्मी को मज़ा चखाने के लिए अब कौन-सी चाल चले।

इस्तकबाल!

विश्व पुस्तक मेले में

(2 -10 फरवरी 2008, प्रगति मैदान, नई दिल्ली)

हम,

***चकमक* और एकलव्य के**

अन्य प्रकाशनों के साथ मिलेंगे...

- **हॉल नम्बर:12 ए, स्टॉल नम्बर:106**
- **हॉल नम्बर:11, स्टॉल नम्बर:23-24**